NEERAJ®

M.S.W. -6

समाज कार्य अनुसंधान

(Social Work Research)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Manish Kumar*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

समाज कार्य अनुसंधान

(Social Work Research)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. समाज कार्य अनुसंधान का परिचय 1
(Introduction to Social Work Research)

2. समाज कार्य में अनुसंधान समीक्षा 11
(Research Review in Social Work)

3. अनुसंधान प्रक्रिया–I: अनुसंधान समस्या का निरूपण 22
(Research Process–I: Formulation of Research Problem)

4. अनुसंधान प्रक्रिया–II: अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करना 35
(Research Process–II: Preparing a Research Proposal)

5. समाज कार्य में अनुसंधान विधियों का परिचय 45
(Introduction to Methods of Research in Social Work)

6. अनुसंधान विधियाँ–I: विवरणात्मक, अन्वेषणात्मक, निदानी, मूल्यांकन और सक्रिय अनुसंधान 59
(Research Methods: Descriptive, Exploratory, Diagonistic, Evaluation and Action Research)

7. अनुसंधान विधियाँ–II: परीक्षणात्मक अनुसंधान 70
(Research Methods–II: Experimental Research)

8. अनुसंधान विधियाँ–III: गुणात्मक अनुसंधान 81
(Research Methods–III: Qualitative Research)

9. प्रतिचयन की विधियाँ 93
(Methods of Sampling)

10. अनुसंधान उपकरण : प्रश्नावलियाँ, निर्धारण पैमाने, अभिरुचि पैमाने और परीक्षण 108
(Research Tools: Questionnaires, Rating Scales, Attitudinal Scales and Tests)

11. साक्षात्कार, अवलोकन और दस्तावेज 121
(Interview, Observation and Documents)

12. आंकड़ा संग्रहण 130
(Data Collection)

13. आंकड़ा संग्रहण और विश्लेषण 140
(Data Processing and Analysis)

14. वर्णनात्मक सांख्यिकी 150
(Descriptive Statistics)

15. आनुमानिक सांख्यिकी/आंकड़े 164
(Inferential Statistics)

16. अनुसंधान प्रस्तुतीकरण 182
(Reporting of Research)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

समाज कार्य अनुसंधान

(Social Work Research)

M.S.W.-6

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. अपनी पसंद के किसी भी विषय पर शोध प्रस्ताव तैयार कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'अनुसंधान तैयार करना'

अथवा

प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प से आप क्या समझते हैं? विभिन्न प्रकार के प्रयोगात्मक अनुसंधान प्रारूप की चर्चा कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-49, 'समाज कार्य में परीक्षात्मक अनुसंधान'

प्रश्न 2. शोध में प्रश्नावली के महत्त्व पर एक टिप्पणी लिखिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-110, 'प्रश्नावली'

अथवा

परिक्षेपण के मापों को परिभाषित कीजिए। इसके बारे में एक टिप्पणी लिखिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-153, 'परिवर्तिता की माप'

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) राष्ट्रीय स्तर पर 90 के दशक के बाद समाज कार्य अनुसंधान की प्रवृत्तियों में हुए महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों की संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-20, प्रश्न-7

(ख) गुणात्मक शोध को परिभाषित कीजिए और गुणात्मक शोध के चरणों को लिखिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-86, प्रश्न-1, पृष्ठ-88, प्रश्न-3

(ग) अनुसंधान में परीक्षणों से आपका क्या तात्पर्य है? इन परीक्षणों के उपयोग की जांच कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-112, 'परीक्षाएं', 'परीक्षाओं के प्रकार', पृष्ठ-113, परीक्षाओं के उपयोग'

(घ) द्विचर संबंधों पर तीसरे चर के प्रभावों की जांच करने की प्रक्रिया पर चर्चा कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-148, प्रश्न-7

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) 'समय अनुमान' से आप क्या समझते हैं?

संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-38, 'समय का आकलन'

(ख) सहसंबंध अध्ययन और अनुसंधान पर चर्चा कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-59, 'सहसंबंध अध्ययन'

(ग) प्रलेखन की परिभाषित कीजिए। सामाजिक कार्य अनुसंधान में इसकी सार्थकता बताइए।

संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-128, प्रश्न-7

(घ) एक शोध में परिकल्पना की आवश्यकता क्यों है? परिकल्पना के परीक्षण में शामिल चरणों की सूची बनाइए।

संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-24, 'परिकल्पना का महत्त्व', पृष्ठ-26, 'परिकल्पना का परीक्षण'

(ङ) विशिष्ट उदाहरणों के साथ व्यापक नमूने लेने की व्याख्या कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-97, 'स्नोबॉल प्रतिचयन'

(च) शोध रिपोर्ट क्यों और कैसे लिखी जाती है?

संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-187, प्रश्न-1

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) अनुसंधान की प्रक्रिया

संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-22, 'अनुसंधान प्रक्रिया'

(ख) चित्रमय उदाहरण के साथ एकल विषय प्रारूप के प्रकार

संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-54, प्रश्न-3

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(ग) मात्रात्मक आंकड़ा

संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-133, प्रश्न-1 (परिमाणात्मक आंकड़े)

(घ) अनुसंधान की रिपोर्ट पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-182, 'रिपोर्ट क्यों और कैसे लिखें?

(ङ) सत्यापनीयता

उत्तर–सत्यापनीयता का अर्थ जानकारी का अध्ययन करने तथा समान नतीजों पर पहुंचने की संभावना से है। एक अच्छे गुणात्मक अध्ययन में आंकड़ों के परीक्षण, परिकल्पनाओं का निर्माण, आंकड़ों का संग्रह आदि में सत्यापन के लिए एक चक्रीय प्रक्रिया को अपनाया जाता है। सत्यापनीयता के तहत क्षेत्रीय कार्यों में संभावित पूर्वाग्रहों और भ्रामक एवं गलत अनुभूतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा क्षेत्रीय कार्य की समस्या की पहचान करने में भी सत्यापनीयता हमारी मदद कर सकती है। शोधकर्ताओं द्वारा भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों में उपयोग किए जाने वाले आंकड़ों के स्पष्टकीकरण में सत्यापनीयता की काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है।

(च) केस अध्ययन पद्धति की विशेषताएं

संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-84, 'केस अध्ययन विधि की विशेषताएं'

(छ) अनुसंधान में साक्षात्कार की सीमाएं

संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-126, 'साक्षात्कार की सीमाएं'

(ज) इलेक्ट्रॉनिक स्प्रेडशीट

उत्तर–इलेक्ट्रॉनिक स्प्रेडशीट एक एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर है, जिसका उपयोग संख्यात्मक डेटा, गणना, व्यवस्थित और विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। इसमें मैन्युअल स्प्रेडशीट के समान पंक्तियाँ और स्तंभ होते हैं। इलेक्ट्रॉनिक स्प्रेडशीट के उदाहरण माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल, ओपन ऑफिस कैल्क, लोटस 1-2-3 और कोरल हैं। एक स्प्रेडशीट में तीन मुख्य घटक होते हैं–वर्कशीट, डेटाबेस और चार्ट।

इलेक्ट्रॉनिक स्प्रेडशीट के लाभ

1. सक्षम करने के लिए कंप्यूटर के शक्तिशाली पहलुओं, जैसे–गति, सटीकता और दक्षता का उपयोग करता है।

उपयोगकर्ता अपने कार्यों को शीघ्रता से पूरा करता है।

2. डेटा प्रविष्टि और हेरफेर के लिए एक बड़ी वर्चुअल शीट प्रदान करता है।

3. दस्तावेज सहेजने और पुनः प्राप्त करने के लिए कंप्यूटर भंडारण उपकरणों पर बड़े भंडारण स्थान का उपयोग करता है।

4. उपयोगकर्ता को साफ-सुथरा कार्य करने में सक्षम बनाता है।

7. यदि वर्कशीट में मान बदले जाते हैं तो सूत्र के परिणाम को स्वचालित रूप से समायोजित करें। इसे स्वचालित पुनर्गणना सुविधाएँ कहा जाता है।

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

समाज कार्य अनुसंधान
(Social Work Research)

समाज कार्य अनुसंधान का परिचय
(Introduction to Social Work Research)

1

परिचय

अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हमें किसी घटना के बारे में विश्वसनीय जानकारी प्राप्त होती है। समाज कार्य के अंतर्गत अनुसंधान कार्य वर्तमान में अत्यधिक महत्त्व प्राप्त कर रहा है। समाज कार्य अनुसंधान ज्ञान की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक अधिगम का प्रयोग करता है। आमतौर पर समाज कार्य अनुसंधान को किसी परिघटना को समझने के लिए क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित पूछताछ के रूप में परिभाषित किया जाता है। वर्तमान में ऐसे क्षेत्रों का अत्यधिक विस्तार हो गया है, जहाँ समाज कार्य अनुसंधान हो सकता है। सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि समाज कार्य अनुसंधान क्या है, उसके बाद ही इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जा सकता है। समाज कार्य अनुसंधान समाज की समस्याओं के अध्ययन में कहाँ तक उपयोगी है, यह जानना भी महत्त्वपूर्ण है। परन्तु इतना सत्य है कि समाज कार्य अनुसंधान सामाजिक समस्याओं में उपयोगी हो सकता है, इसलिए इसका महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहा है तथा समाज कार्य अनुसंधान से संबंधित विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण भी आवश्यक हो गया है।

प्रस्तुत अध्याय में समाज कार्य अनुसंधान से संबंधित विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। अनुसंधान और वैज्ञानिक अनुसंधान का अर्थ, वैज्ञानिक अनुसंधान का संकल्पनात्मक आधार, तथ्य और सिद्धांत का उद्देश्य, सिद्धांत विकसित करना, वैज्ञानिक विधि, वैज्ञानिक विधि की प्रमुख विशेषताएँ, समाज विज्ञान में वैज्ञानिक विधि का उपयोग, सामाजिक विज्ञानों में वैज्ञानिक विधि के उपयोग के लिए संभावनाएँ और सीमाएँ, सामाजिक अनुसंधान और समाज कार्य अनुसंधान का अर्थ, सामाजिक अनुसंधान की प्रक्रिया, समाज कार्य अनुसंधान का लक्ष्य तथा समाज कार्य अनुसंधान प्रक्रिया जैसे विषयों का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त समाज कार्य अनुसंधान की प्रकृति तथा समाज कार्य में अनुसंधान के विस्तार पर भी प्रकाश डाला गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

अनुसंधान और वैज्ञानिक अनुसंधान का अर्थ

अनुसंधान

हम वस्तुओं तथा परिघटनाओं के संदर्भ में अपनी दुविधाओं से अनभिज्ञ होते हैं, इसलिए हम अपने प्रेक्षणों को देखी गई वस्तुओं तथा परिघटनाओं के आधार पर बनाते हैं। इस प्रक्रिया में सही तथा गलत निर्णय भी लिए जा सकते हैं। जानकारी लेने की विधियों की कुछ सीमाएँ होती हैं। ऐसा कोई भी अध्ययन जिससे नई जानकारी प्राप्त हो या विद्यमान जानकारी में वृद्धि हो, अनुसंधान कहलाता है, चाहे जानकारी किसी भी विधि से प्राप्त की जाए। दूसरे शब्दों में अनुसंधान को जानकारी बढ़ाने की दिशा में खोजबीन तथा पड़ताल के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

वैज्ञानिक अनुसंधान

अनुसंधान को एक विशेष उद्यम माना जाता है, जिसमें ज्ञान को बढ़ाने के लिए खोजबीन की जाती है। वैज्ञानिक अनुसंधान को प्राकृतिक परिघटनाओं के विषय में क्रमबद्ध पड़ताल के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिससे प्राकृतिक परिघटनाओं के बीच संबंधों को समझा जा सके।

वैज्ञानिक अनुसंधान का संकल्पनात्मक आधार

वैज्ञानिक अनुसंधान तथ्यों तथा सिद्धांतों पर आधारित होते हैं। तथ्य का संबंध किसी देखी गई घटना से होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान का उद्देश्य तथ्यों तथा उनके बीच परस्पर संबंधों को प्रस्तुत करना है, जिसमें तथ्यों और संबंधों की प्रकृति को समझना तथा उनकी व्याख्या करना भी शामिल है। तथ्यों और उनके बीच संबंधों को सामान्य वक्तव्यों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ये वक्तव्य ही सिद्धांतों की रचना करते हैं। **गुडे** और **हैट** के अनुसार, "सिद्धांत का अर्थ तथ्यों के बीच संबंधों को क्रमबद्ध करने से है।" **कलिंगर** के अनुसार, "सिद्धांत संकल्पनाओं, परिभाषाओं और वक्तव्यों

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

का एक समूह है, जो परिवर्तियों का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करता है।" सिद्धांतों की अनेक व्याख्याएँ हैं। इन व्याख्याओं में कुछ समान बिन्दु भी हैं। सिद्धांत को तथ्यों और उनके बीच परस्पर संबंधों की क्रमबद्ध व्याख्या के रूप में समझा जा सकता है।

तथ्य और सिद्धांत

वैज्ञानिक अनुसंधान तथ्यों से होकर सिद्धांतीकरण की ओर अग्रसर होता है। तथ्यों को व्यवस्थित करके उन्हें अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। वैज्ञानिक विधि का उद्देश्य भी तथ्यों को व्यवस्थित करने के लिए क्रियाविधि विकसित करना है। तथ्यों को एकत्रित करने के बाद उनका समाकलन, संगठन और वर्गीकरण किया जाता है, जिससे भिन्न-भिन्न परिणामों को अर्थपूर्ण बनाया जा सके। जब तथ्यों को भिन्न-भिन्न परिप्रेक्ष्य में रखा जाता है, तो यह हमारी समझ को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि सिद्धांतों का निरूपण किया जाये। सिद्धांत प्रेक्षणों के परिणामों को आपस में जोड़ता है, जिससे वैज्ञानिकों के लिए परिवर्तियों और उनके बीच संबंधों के बारे में वक्तव्य तैयार करना अधिक आसान हो जाता है। तथ्य में सिद्धांत निहित होता है तथा सिद्धांत में तथ्य निहित होते हैं।

तथ्य अपने महत्त्व को सैद्धान्तिक ढाँचे से प्राप्त करता है। **वान डालेन** (1973) के अनुसार, "तथ्यों और सिद्धांतों के बीच स्थायी तथा जटिल संबंध होता है। ये एक-दूसरे के पूरक हैं। तथ्यों का महत्त्व उन सिद्धांतों से होता है जो उन्हें परिभाषित, वर्गीकृत तथा पूर्वानुमानित करते हैं। सिद्धांतों का महत्त्व भी तभी होता है, जब उन्हें तथ्यों द्वारा परखा जाता है।" प्रारंभ में अनुसंधान को समस्याओं के उत्तर खोजने के लिए सीमित कर देना चाहिए। बाद के चरणों में यह पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। वैज्ञानिक सिद्धांत ज्ञान को संगठित करके उसे अर्थपूर्ण और वास्तविक ढाँचे में ढालता है।

सिद्धांत का उद्देश्य

सिद्धांत द्वारा कुछ उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। सिद्धांत विद्यमान जानकारी को व्यवस्थित करता है। यह आंकड़ों की अधिक समझ विकसित करता है तथा मूल परिणामों को वहनीय बनाता है। सिद्धांत प्रत्यक्ष घटनाओं तथा संबंधों के लिए व्याख्या प्रस्तुत करता है। यह परिवर्तियों की पहचान करता है। उदाहरण के लिए **समसन** का सिद्धांत प्रेरण, पुरस्कार और अभ्यास के बीच सम्बन्ध को समझता है। सिद्धान्त घटनाओं के होने का पूर्वानुमान तथा खोज करने को संभव बनाता है। सिद्धांत पड़ताल के लिए प्रेरणा प्रदान करके नई जानकारी के विकास को प्रेरित करता है।

सिद्धांत विकसित करना

अच्छे सिद्धांत कल्पना पर आधारित नहीं होते। सिद्धांत एकत्रित तथ्यों पर आधारित होते हैं। खोजकर्त्ता अनुमान लगाता है, कड़ियों को जोड़ता है और फिर एक परिकल्पना प्रस्तुत करता है। खोजकर्त्ता निष्कर्ष निकालता है, तथ्यों को देखता है, तथ्यों पर सामान्यीकरण अथवा संकल्पनात्मक ढाँचा बनाता है और अंततः सिद्धांत का निर्माण करता है। सिद्धांत प्रमाणों पर आधारित होते हैं। सिद्धांत हमारे ज्ञान को बढ़ाने का कार्य करते हैं। संकल्पनात्मक ढाँचे के द्वारा हम अपने प्रमाणों को सत्यापित कर सकते हैं। सिद्धांतों में न देखे जाने वाले शब्द सम्मिलित किये जाते हैं। उदाहरण के लिए गुरुत्वाकर्षण को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा जा सकता, परंतु उसके प्रभावों को देखा जा सकता है। सैद्धान्तिक वक्तव्यों के शब्दों को सैद्धांतिक निर्माण कहते हैं। अधिगम के अनेक सिद्धांत व्यवहार में प्रेरणा कारक कहलाते हैं।

वैज्ञानिक विधि

विधि की जानकारी के बिना अनुसंधान की प्रकृति और विषय-वस्तु को नहीं समझा जा सकता। वैज्ञानिक अनुसंधान में प्रयुक्त की जाने वाली विधि को वैज्ञानिक विधि कहते हैं। **जॉर्ज लुंडबर्ग** के अनुसार वैज्ञानिक विधि के तीन चरण होते हैं–क्रमबद्ध प्रेक्षण, वर्गीकरण और आंकड़ों का समाकलन। इनके द्वारा वैज्ञानिक विधि तथ्यों की पुष्टि तथा निष्कर्षों की वैधता को स्थापित करती है। **लुंडबर्ग** के अनुसार वैज्ञानिक विधि के क्रमबद्ध प्रेक्षण का अर्थ है, अन्वेषण क्रमबद्ध होना। इसका उद्देश्य तथ्यों की यथार्थ रूप में खोज करना है, जिससे खोजकर्त्ताओं को अपने निष्कर्षों पर काफी भरोसा हो जाता है। वैज्ञानिक विधि का सरोकार सार्वभौमिकता अथवा पूर्वानुमान से होता है। वैज्ञानिक विधि परिघटना के बारे में पूर्वानुमान को संभव बनाती है। वैज्ञानिक विधि की प्रमुख विशेषताएँ हैं–वस्तुनिष्ठता, सत्यापन, प्रतिकृति और पूर्वानुमान।

वस्तुनिष्ठता–यह वैज्ञानिक विधि की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है। अनुसंधान भेदभाव से परे होता है। अनुसंधानकर्त्ता को व्यक्तिगत भेदभाव तथा पूर्वाग्रहों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए तथा परिकल्पना का समर्थन करने वाले आंकड़ों से बचना चाहिए। परिकल्पना के परीक्षण पर जोर देना चाहिए। अनुसंधानकर्त्ता सही निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए आंकड़ों तथा तर्कों का उपयोग कर सकता है। अनुसंधान के उपकरणों तथा साधनों के मानकीकरण के द्वारा वस्तुनिष्ठता का गुण प्राप्त किया जा सकता है।

सत्यापन करना–यह वैज्ञानिक विधि का एक महत्त्वपूर्ण गुण है। अनुसंधानकर्त्ता द्वारा प्रस्तुत अनुसंधानों की पुष्टि करना आवश्यक है। अनुसंधान के निष्कर्षों की छानबीन की जा सकती है। वैज्ञानिक विधि की यह विशेषता वस्तुनिष्ठता के मानक से संबंधित है। यह ऐसे तथ्यों पर आधारित होती है, जिसे सत्यापित किया जा सकता है। सत्यापन दो अधिगमों के द्वारा प्राप्त हो सकता है-साधनों के विश्लेषण द्वारा तथा अध्ययन को भिन्न सेम्पल के लिए दोहराने के द्वारा।

प्रतिकृति/दोहराना–अनुसंधान के निष्कर्षों की पुष्टि दोहराने के द्वारा ही की जा सकती है। वैज्ञानिक विधि के उपयोग द्वारा परिणामों की पुष्टि करना संभव होता है। यदि अनुसंधान वैज्ञानिक विधि के उपयोग द्वारा किया जाता है, तो उसके सत्यापन के लिए उसका दोहराव या प्रतिकृति की जा सकती है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पूर्वानुमान–पूर्वानुमान सांख्यिकीय विधियों तथा तकनीकों के द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए प्रतिगमन विश्लेषण एक ऐसी सांख्यिकीय प्रक्रिया है, जो परिघटनाओं के विषय में पूर्वानुमान करती है।

समाज विज्ञान में वैज्ञानिक विधि का उपयोग

समाज विज्ञान मानव व्यवहार से संबंधित होता है, जो काफी जटिल होता है। इसलिए मार्गदर्शित स्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन नहीं किया जा सकता। इससे अनुसंधानकर्त्ता के लिए विषयपरकता और व्यक्तिनिष्ठता जैसी समस्यायें उत्पन्न हो सकती हैं। समाज विज्ञान की प्रकृति और विषय-वस्तु से उत्पन्न समस्या वैज्ञानिक विधि के महत्त्व को समाप्त नहीं करती। वैज्ञानिक विधि को सामाजिक परिघटनाओं के अध्ययन के लिए उसकी सीमाओं के बावजूद स्वीकार किया जा सकता है।

सामाजिक विज्ञानों में वैज्ञानिक विधि के उपयोग के लिए संभावनाएँ और सीमाएँ

समाज विज्ञान का संबंध मानव से है, जिसके कारण वैज्ञानिक अनुसंधान का विषय अधिक जटिलताएँ उत्पन्न करता है। समाज विज्ञानियों को अत्यंत सावधानी से प्रेक्षणों को लेना चाहिए। विषयपरक तथा गुणात्मक निर्णयों को अधिक यथार्थ मात्रात्मक मापकों द्वारा पूर्ति की आश्यकता होती है। समाज विज्ञान सामान्यीकरण स्थापित करने तथा व्यवहारों का पूर्वानुमान करने में समर्थ नहीं होता। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि समाज विज्ञान में वैज्ञानिक विधि के अनुप्रयोग की अनेक सीमाएँ हैं।

सामाजिक अनुसंधान और समाज कार्य अनुसंधान का अर्थ

सामाजिक अनुसंधान

सामाजिक अनुसंधान का उद्देश्य मानव व्यवहार में कारक संबंधों की खोज करना है। मानव व्यवहार में भी पूर्वानुमानों के सेट पाये जाते हैं। सामाजिक अनुसंधान संबंधों को प्रबलताओं में स्थापित करने, मापने और विश्लेषित करने का प्रयास करता है। यद्यपि सामाजिक अनुसंधान का सामाजिक परिघटनाओं के लिए अपना विशिष्ट गुण होता है। सामाजिक अनुसंधान में सक्रिय तथा सचेत मनुष्य होते हैं। व्यक्तिगत व्यवहार सामाजिक अनुसंधान के कार्य को कठिन बना देता है। सामाजिक अनुसंधान में वस्तुपरक अभिगम का दायरा काफी छोटा होता है। सामाजिक अनुसंधान का संबंध सामाजिक आंकड़ों से है, जो भौतिक आंकड़ों से अधिक जटिल होते हैं। सामाजिक आंकड़ों के जटिल स्वरूप से सामाजिक अनुसंधान में पूर्वानुमान की शक्ति कम हो जाती है। सामाजिक अनुसंधान की अधिकांश विषयवस्तु गुणात्मक होती है। इसमें मात्रात्मक मापन को स्वीकार नहीं किया जाता।

सामाजिक अनुसंधान की प्रक्रिया

अनुसंधान प्रक्रिया अनुसंधान परियोजना का एक छोटा रूप होती है। अनुसंधान परियोजना में वैज्ञानिक क्रियाकलाप होते हैं, जिनमें अनुसंधानकर्त्ता जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। प्रत्येक अनुसंधान परियोजना विशिष्ट होती है तथा उनमें कुछ समान क्रियाकलाप होते हैं। वास्तव में अनुसंधान प्रक्रिया परस्पर संबंधित क्रियाकलापों की प्रणाली होती है।

समाज कार्य अनुसंधान

समाज कार्य अनुसंधान, अनुसंधान विधियों का अनुप्रयोग है, जिसकी समाज कार्यकर्त्ता को आवश्यकता होती है। समाज कार्य अनुसंधान संबंधी जानकारी समाज कार्य की विधियों और तकनीकों को समझने के लिए आवश्यक है। यह समाज कार्यकर्त्ता को ग्राहकों, कार्यक्रमों तथा संस्थाओं संबंधी जानकारी प्रदान करता है। समाज कार्य अनुसंधान समाज कार्यकर्त्ताओं को उनके व्यवहार में परिवर्तन करने का अवसर प्रदान करता है। समाज कार्य अनुसंधान समाज कार्यविधि के लक्ष्यों की जानकारी देने का प्रयास करता है कि वे कौन-से कारक हैं, जो समाज कार्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति के सहायक तथा अवरोधक हैं। समाज कार्य अनुसंधान सामाजिक अनुसंधान सामाजिक अनुसंधान की कार्यविधि को समझाता है।

समाज कार्य अनुसंधान का लक्ष्य

समाज कार्य एक व्यावहारिक व्यवसाय है। समाज कार्य अनुसंधान का लक्ष्य समाज कार्य व्यवहार में हस्तक्षेप तथा उपचार की प्रभाविता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर खोजना है। समाज कार्य अनुसंधान समाज कार्य में आने वाली समस्याओं के उत्तर खोजने में भी सहायक होता है। समाज कार्य अनुसंधान व्यवहार के लिए जानकारी का आधार निर्मित करने में भी सहायक है।

समाज कार्य अनुसंधान प्रक्रिया

समाज कार्य अनुसंधान समस्या की पहचान तथा लक्ष्य निर्धारित करने से आरंभ होता है। इसके बाद समस्याओं का मूल्यांकन किया जाता है। समस्या की पहचान तथा समस्याओं का मूल्यांकन करने के बाद लक्ष्य निर्धारित किया जाता है। लक्ष्य विशिष्ट तथा मापन योग्य होने चाहिए। इसके बाद हस्तक्षेप पूर्व मापन का चरण आता है। इसके बाद हस्तक्षेप को लागू किया जाता है। हस्तक्षेप प्रावस्था के दौरान केवल एक ही प्रकार के हस्तक्षेप का प्रयोग किया जाना चाहिए। अन्तिम चरण में हम हस्तक्षेप के प्रभावों का मूल्यांकन करते हैं।

समाज कार्य अनुसंधान की प्रकृति

समाज कार्य अनुसंधान सामाजिक कार्यों में आने वाली समस्याओं से संबंधित है। समाज कार्य अनुसंधान में समस्या का अध्ययन समाज कार्य तथा व्यावसायिक समाज कार्य की दृष्टि से किया जाता है। अनुसंधान समस्या की रूपरेखा बनाना, आंकड़ों को एकत्र करना तथा उनका विश्लेषण करना जैसे कार्य इस प्रकार करने चाहिए कि वे व्यावसायिक समाज कार्य के लिए अत्यधिक

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उपयोगी हो सकें तथा समाज कार्य में नई जानकारी का समावेश कर सकें। समाज कार्य अनुसंधान में निष्कर्ष प्रेरण तर्कशक्ति के द्वारा निकाले जाते हैं अर्थात किसी समूह के कुछ सदस्यों के बारे में तथ्य एकत्रित करके पूरे समूह के बारे में निष्कर्ष निकाले जाते हैं। समाज कार्य अनुसंधान में प्रेरक तर्क शक्ति हमें प्रेक्षण से सिद्धांत तक ले जाती है। उदाहरणार्थ; सामाजिक कार्यकर्त्ता यह देख सकते हैं कि उन परिवारों के बच्चों में आपराधिक प्रवृत्ति अधिक होती है, जहाँ माता-पिता तथा बच्चों का संबंध कमजोर होता है। इस आधार पर सामाजिक कार्यकर्त्ता निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि माता-पिता और बच्चों के बीच कमजोर संबंध से आपराधिक प्रवृत्ति का जन्म होता है। समाज सेवा कार्य सूक्ष्म स्तर का कार्य है; जैसे–व्यक्तियों, समूहों तथा समुदाय के साथ कार्य करना। समाज कार्य अनुसंधान मूल्यांकन पर विशेष बल देता है, इसलिए इसे मूल्य-निर्धारक अनुसंधान भी कहा जाता है। समाज कार्य अनुसंधान के अन्तर्गत अनेक मूल्य निर्धारक अनुसंधान किए जाते हैं जिनमें कुछ अनुसंधान प्रभाव/असर, क्षमता तथा प्रभाविता पर केन्द्रित होते हैं।

समाज कार्य में अनुसंधान का विस्तार/दायरा

समाज कार्य ज्ञान, संकल्पनाओं तथा सिद्धांतों के निकाय का पुनः परीक्षण करता है तथा समाज कार्य व्यवहार के क्षेत्र में सिद्धांत और वैध संकल्पनाओं को विकसित करने का प्रयास करता है। समाज कार्य अनुसंधान समाज कार्य की विभिन्न विधियों की क्षमता को जानने के लिए भी किया जा सकता है। संसाधनों की पहचान, सेवाओं का मूल्यांकन तथा समाज कार्य संस्थाओं के कार्यक्रम कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ समाज कार्य अनुसंधान किये जा सकते हैं। समाज कार्य अनुसंधान समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं का पता लगाने के लिए भी किया जा सकता है। समाज कार्य अनुसंधान में निम्नलिखित सम्मिलित होता है–

समाज कार्य का सम्पूर्ण क्षेत्र, संकल्पनाएँ, सिद्धान्त, विधियाँ, कार्यक्रम, सेवाएँ तथा समस्याएँ। समाज कार्य अनुसन्धान व्यक्तियों, समूहों, परिवारों, संस्थाओं तथा कार्यक्रमों के मूल्यांकन पर अधिक जोर देता है। समाज कार्य अनुसंधान में, अनुसंधान की रूपरेखा, विश्लेषणात्मक कार्यप्रणाली तथा सामाजिक संस्थाओं के कार्यक्रम विश्लेषण के कार्य के अनुसार परिवर्ती हो सकते हैं। समाज कार्य अनुसंधान व्यवहार रूपान्तरण के तरीकों को सीमित कर सकता है। यह समाज कार्यप्रणाली को बढ़ाने के तरीकों और साधनों का पता लगाने में सहायक होता है।

जब अनुसंधान का फोकस संकल्पनाओं और सिद्धांतों पर होता है, तो यह अन्तरावर्ती अनुसंधान कहलाता है। इसमें ग्राहकों, व्यक्तियों, समूहों, समुदायों तथा उपचार से संबंधित अध्ययन भी सम्मिलित होता है। समाज कार्य अनुसंधान के क्षेत्रों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. सेवा को पहचानने, मापने और स्थापित करने के अध्ययन।
2. प्रदान की जाने वाली सेवाओं का मापना।
3. समाज कार्य हस्तक्षेप के परिणामों का परीक्षण, मापन तथा मूल्यांकन करना।
4. सेवाएँ प्रदान करने की तकनीकों को बताना।
5. समाज कार्य की कार्यप्रणाली का अध्ययन।

समाज कार्य के अंतर्गत निम्नलिखित अनुसंधान क्षेत्र हो सकते हैं–

(i) समुदाय का स्वास्थ्य
(ii) समुदाय के लोगों का मानसिक स्वास्थ्य
(iii) बाल-कल्याण
(iv) महिलाओं का कल्याण
(v) युवाओं का कल्याण
(vi) वृद्धजनों का कल्याण
(vii) सामाजिक बुराइयाँ
(viii) गरीबी उन्मूलन
(ix) मानसिक अवमंदन
(x) बाल-अपराध
(xi) जुर्म और सुधार इत्यादि।

इसमें और भी पहलू सम्मिलित हो सकते हैं। इन क्षेत्रों में अक्सर समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा अनुसंधान कार्य किया जाता है। एक से अधिक समस्या क्षेत्रों में अनुसंधान व्यक्तियों, परिवारों, समूहों, सामुदायिक संगठनों तथा सामाजिक प्रणालियों पर केन्द्रित हो सकता है।

स्वपरख अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. अनुसंधान तथा वैज्ञानिक अनुसंधान को परिभाषित कीजिए। वैज्ञानिक अनुसंधान का संकल्पनात्मक आधार क्या है?

उत्तर–अनुसंधान–हम अक्सर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं तथा परिघटनाओं को देखते हैं। हम उनके संबंध में अपनी धारणाएँ बनाते हैं। परन्तु अक्सर हम वस्तुओं और परिघटनाओं के संदर्भ में अपनी दुविधाओं से अनजान होते हैं। हम उनके संबंध में कोई प्रश्न भी नहीं करते। अक्सर हम अपने प्रेक्षणों को उन वस्तुओं तथा परिघटनाओं के आधार पर बनाते हैं, जो हम प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं। इस प्रक्रिया में कई बार गलत कारणों के आधार पर सही निर्णय भी लिए जा सकते हैं तथा सही कारणों के लिए गलत निर्णय भी लिए जा सकते हैं। यह प्रेक्षण की प्रक्रिया पर कई प्रकार के सवाल उठाता है, जैसे–क्या प्रेक्षणों में कोई कमी है? प्रेक्षण करते समय क्या हमें अपनी सीमाओं की जानकारी थी? एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जानकारी लेने के जितने स्रोत तथा विधियाँ होती हैं, उनकी कुछ सीमाएँ होती हैं।

अनुसंधान उस प्रक्रिया को कहते हैं, जिसमें नई जानकारी प्राप्त की जाती है। दूसरे शब्दों में, ऐसा कोई भी अध्ययन, जिससे

www.neerajbooks.com